ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Production of L. P. G. Cylinders

+

*639. PROF. NIRMALA KUMARI SHAKTAWAT :
SHRIMATI KISHORI SINHA :

Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state :

(a) the number of L. P. G. cylinders manufacturing units in the country at present and their annual production capacity and the capacity being utilised ;

(b) the number of new units which have been registered with D. G. T. D. for the purpose ;

(c) the additional production of cylinders to be made during 1984-85 ; and

(d) the demand of the L. P. G. cylinders in the country at present as also their expected demand during the coming three years and whether these new units will be able to meet this demand ?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI NARAYAN DATT TIWARI) : (a) 30 units with an installed capacity of 72.85 lakh cylinders per annum are engaged in the manufacture of LPG cylinders. Their production in 1983 has been 19.33 lakh cylinders.

(b) 422 units during 1983-84.

(c) and (d) Annual requirement of LPG cylinders has been estimated at 50 lakh cylinders. With the capacity already installed or registered, the demand for LPG cylinders is likely to be met from indigenous sources in future.

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत : माननीय अध्यक्ष जी, मंत्री जी ने यह बताया है कि 30 यूनिट जो हैं, वे इस समय 72.85 लाख सिलेंडर बनाने की क्षमता रखते हैं परन्तु मान्यवर, यह बड़े दुःख की बात है कि आज देश में बहुत अधिक जंगल कट रहे हैं और गृहणियां भी बहुत अधिक परेशान हैं और आप के यूनिट केवल 19.33 लाख सिलेंडर ही बना पा रहे हैं। मैं जानना चाहती हूं कि इस प्रकार के जो रूग्ण यूनिट हैं, क्या उन को बंद करने की आप कोई योजना रखते हैं ?

दूसरा मेरा प्रश्न यह है कि जो सिलेंडर बन रहे हैं, उनके साथ ही साथ रेगूलेटरों की, जोकि एल० पी० जी० सिलेंडर में काम में आते हैं, बहुत कमी है। तो सिलेंडरों के साथ ही साथ क्या रेगूलेटरों की कमी को दूर करने के लिए भी सरकार कोई व्यवस्था कर रही है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी : श्रीमन्, सम्मानित सदस्या ने जिस समस्या का उल्लेख किया है, उस का समाधान करने का प्रयास यथासंभव हो रहा है। जो निर्धारित कैपेसिटी है, जो क्षमता है, उस का पूरा उपयोग हो सके, इस का प्रयास किया जा रहा है। जो कमी हुई है, वह केवल मात्र इस लिये नहीं कि सब कंपनियां रूग्ण हैं या बीमार हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि सिलेंडरों का निर्माण करने के लिए जिस इस्पात की आवश्यकता है, उस की यथाकिंचित कमी का होना है। 53 हजार टन इस्पात आयात किया जा रहा है। इस के साथ ही साथ 67 हजार टन इस्पात जो स्वदेशी उपलब्ध है, उस की उपलब्धता को भी बढ़ाया जा रहा है ताकि गुणात्मक किस्म का फौलाद मिल सके। मैंने यह भी निर्देश दिये हैं कि इसके जो निर्माता हैं, उन की मीटिंग बुलायी जाए ताकि पूरी कैपेसिटी, क्षमता का पूर्ण उपयोग हो सके।

अध्यक्ष महोदय : इतनी शुद्ध हिन्दी में यह "कैपेसिटी" शब्द कहां घुस गया।

श्री एम० रामगोपाल रेड्डी : यह हमारे समझने के लिए बहुत अच्छा है। इसको हम अच्छी तरह समझ सकते हैं।

श्री नारायण दत्त तिवारी : मैं क्षमता का उल्लेख कर रहा था। कभी-कभी अनुवादक की भी सहायता करनी पड़ती है। जब अनुवादक हमारी सहायता करता है, तो कभी उन की सहायता भी करनी चाहिए।

जहां तक रेगूलेटरों का प्रश्न है, वह भी महत्व का प्रश्न है और मैं सम्मानित सदस्या को आश्वस्त करना चाहता हूं कि उन की कमी को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत : आज हमारा देश आगे बढ़ गया है और हम अन्तरिक्ष में जाने की बात सोचते हैं।

(व्यवधान). और गये भी हैं और हमारे राकेश शर्मा वहां पहुंच गये हैं। ऐसी स्थिति में हम मंत्री जी से इस प्रकार की आशा नहीं रखते कि हमारे यहां कच्चे माल की कमी की वजह से छोटा काम, जो बहुत ही अति-आवश्यक है, रुक जाए क्योंकि इस में केवल गृहणियों का सवाल नहीं है बल्कि देश का सवाल है। आज देश में जंगल बराबर काटे जा रहे हैं और इसके साथ ही साथ पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स की भी कमी है, केरोसिन आयल की भी कमी है। तो यह अतिशीघ्र होने वाला काम है और माननीय मंत्री जी ने आश्वासन दिया है कि इसको हम पूरा करेंगे। 422 यूनिट इन्होंने 1983-84 में स्थापित किये हैं, मेरा यह निवेदन है कि क्या पांच साल के अन्दर या छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक और सातवीं पंचवर्षीय योजना जो शुरू होने वाली है, उस वक्त तक की जो कमी हैं क्या हम उसको पूरा कर पाएंगे।

श्री नारायण दत्त तिवारी : श्रीमन्, जहां तक उत्पादन का प्रश्न है, 1978 में 1 लाख 20 हजार सिलेंडर का था जो 1983 में 18 लाख 56 हजार सिलेंडर का हो गया। तो ऐसी बात नहीं है कि उत्पादन नहीं बढ़ा है। और जो हमने लायसेंस दिए हैं, जो रजिस्ट्रेशन हुए हैं उससे कुल मिलाकर 12 करोड़ सिलेंडर का रजिस्ट्रेशन हुआ है। राज्य सरकार के निदेशालय भी इस प्रकार के रजिस्ट्रेशन करते हैं। पिछले वर्ष 422 यूनिट रजिस्टर किए गए। इस साल वे उत्पादन में आएंगे। इससे आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी।

DR. VASANT KUMAR PANDIT: Now that we have got sufficient installed capacity and about 422 new units are already registered with the DGTD given if 25 per cent of them go into production, we will have sufficient capacity of cylinders. There is a technology which is being used for the valve. In the background of constant assurances from the Prime Minister to this House, may I know whether any import of new technology is being contemplated by the government or not, whether out of these 422 new units which have been registered, some companies are seeking to import new technology which has been rejected in their own countries, which is out-dated and which is not internationally accepted while the present technology, which is being used is working very effectively and efficiently. Are there any units which have asked for import of new technology for valve; if so, what is the reaction of the government thereupon?

SHRI NARAYAN DATT TIWARI: I am not at the moment aware of any such application which is demanding import, which is requesting for import, of new technology in the field of manufacture of gas cylinders. My information is that we do have the technology. But if the safety standard requires the import of new technology, just for safety consideration, then we can consider.

श्री बनारसी दास : पिछले दो सालों से गैस के दाम बढ़कर 46 रुपए हो गए हैं।

इससे कंज्यूमर्स को तकलीफ हो रही है। इसी प्रकार जिलों में जो एजेंसीज दी जा रही हैं वे बहुत कम हैं।

श्री नारायण दत्त तिवारी : श्रीमन्, सम्मानीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है वे मेरे विभाग से संबंधित नहीं है। मेरा संबंध सिलेंडरों के उत्पादन से है। विद्वान सदस्य क्षमा करेंगे यदि मैं उत्तर न दे सकूं।

श्री हीरालाल आर० परमार : अध्यक्ष महोदय, पिछले कई सालों से जलाऊ लकड़ी और कैरोसिन के दाम ज्यादा बढ़ गये हैं।

अध्यक्ष महोदय : दाम की बात का तो अभी जिक्र हो गया कि इनसे संबंधित नहीं है।

श्री हीरालाल आर० परमार : मैं जानना चाहता हूं कि गरीब लोगों के लिए क्या कोई छोटे सिलेंडर की योजना है जो 25 रुपए में उपलब्ध हो सके।

अध्यक्ष महोदय : गैस की कीमत तो उतनी ही रहेगी, छोटा कर लो या बड़ा कर लो।

श्री हीरालाल आर० परमार : उसकी कीमत तो कम होगी।

अध्यक्ष महोदय : तो फिर दो रखने पड़ेंगे।

बदायूं में आलू के चिप्स बनाने के कारखाने की स्थापना

*640. **श्री जयपाल सिंह कश्यप** : क्या **उद्योग मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने बदायूं जिले में आलू के चिप्स आदि बनाने के लिए एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी है और यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ; और

(ख) इस कारखाने पर कितनी लागत आयेगी और इसकी क्षमता कितनी होगी तथा इसमें कितने लोगों को रोजगार मिलेगा ?

उद्योग मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी) : (क) और (ख) जी हां। वर्ष 1982 के दौरान, मै० वेलगा फूड्स लिमिटेड को बदायूं जिले में 1,75,200 मी० टन फ्रेंच फ्राइज फ्रोजन (आलू के चिप्स) आदि बनाने की वार्षिक क्षमता का एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी गई है। परियोजना की अनुमानित लागत 3.50 से 4 करोड़ रुपये के आसपास है। आशा की जाती है कि इससे लगभग 170 कारगारों को रोजगार मिल सकेगा।

श्री जयपाल सिंह कश्यप : माननीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय उद्योग मंत्री जी को पहले तो इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि बदायूं जैसे पिछड़े हुए क्षेत्र में, जहां, आलू काफी तादाद में पैदा होता है, लेकिन किसानों को उसका सही मूल्य नहीं मिल पाता इसलिए आलू की चिप्स बनाने का कारखाना खुलने से उस क्षेत्र के किसानों को काफी सुविधा मिलेगी तथा रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। मैं यह जानना चाहूंगा कि इस कारखाने के बनने में क्या प्रगति है कब तक तैयार हो जायेगा और कब तक काम करने लगेगा ? बरेली और फरूखाबाद भी उत्तर प्रदेश के पिछड़े हुए आलू पैदा करने वाले क्षेत्र हैं। क्या वहां भी इस तरह का कारखाना स्थापित करने की व्यवस्था करेंगे ?